सोचो और बताओ

1. **प्रश्न – बंद अलमारी में रखी किताबें क्या सोचती होंगी?**

   उत्तर – बंद अलमारी में रखी किताबें यह सोचती होंगी कि लोग अब उनका महत्व नहीं समझते।

2. **प्रश्न – अगर किताबें न बोलतीं तो क्या होता?**

   उत्तर – अगर किताबें न बोलतीं तो उन्हें रद्दीवाले को बेच दिया जाता।

प्रश्न – किताब और ई-किताब में क्या पसंद करोगे और क्यों?

उत्तर – किताबें और ई किताबें दोनों ही अपना-अपना महत्व रखती हैं, दोनों विद्या प्राप्त करने का साधन हैं। इसलिए दोनों को ही पसंद करना और महत्व देना चाहिए।

मौखिक

प्रश्नों के उत्तर बताओ —

क. प्रश्न – पुस्तकों की अच्छी देख-रेख कैसे करोगे?

उत्तर – इस प्रश्न का उत्तर बच्चे स्वयं देंगे।

ख. प्रश्न – माँ ने क्या ठान लिया होगा?

उत्तर – माँ ने बच्चों को किताबों का महत्व समझाने का ठान लिया होगा।

ग. प्रश्न – किताबें हमारी अच्छी साथी कैसे हैं?

उत्तर – किताबें हमें ज्ञान देती हैं, अच्छी-अच्छी बातें सिखाती हैं, हमें सही-गलत का अंतर बताती हैं, यह सब जो बताता है वह सच्चा साथी होता है इसलिए किताबें हमारी अच्छी साथी होती हैं।

लिखित

2. **प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखो—**

क. किताबों के पुराने और अब के रूप में क्या अंतर है?

उत्तर किताबों के रूप में आरंभ से अब तक बहुत बदलाव आए हैं। पहले किताबों का कागज़ और ई-किताब वाला रूप नहीं था। भोज-पत्र और कपड़े पर स्याही से लिखा जाता था। धीरे-धीरे कागज़ का आविष्कार चीन में Cai Lun ने किया था। इसके बाद भारतवर्ष में भी कागज़ का उत्पादन और इस्तेमाल होने लगा। और अब कागज़ रहित किताबें भी हम पढ़ते-देखते हैं, जो ई-किताब के रूप में हैं।

ख. आदी और दीया को अंत में क्या अहसास हुआ और उन्होंने माँ से क्या कहा?

उत्तर ‘‘किताबों की दुखभरी बातें सुनकर दीया और आदी ने निश्चय किया कि वे किताबें रद्दी में नहीं बेचेंगे। अपना एक छोटा-सा किताबघर बनाएँगे। स्वयं भी किताबें पढ़ेंगे और मित्रों को भी पढ़ने के लिए देंगे। कुछ किताबें ज़रूरतमंदों को भी देंगे। वे समझ गए थे कि किताबों का मूल्य मोती-रत्नों से भी अधिक होता है।’’

3. आशय स्पष्ट करो—

- *किताब का अध्ययन ही नहीं मनन भी करना।*

उत्तर *किताबों में लिखी बातें केवल पढ़कर ही नहीं छोड़ देनी चाहिए अपितु उनपर सोचना-विचारना या मनन करके अपने जीवन में उतारना चाहिए।*

- *हम शिक्षक और शिष्य के बीच की डोरी हैं।*

उत्तर *किताबों के माध्यम से ही शिक्षक और शिष्य एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।*